



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पत्ति पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२१८८५३३३०२७०	२३. ८. २३	५	३-६

हकूमि ने गाजर घास उन्मूलन अभियान चलाया

जागरण संवाददाता, हिसार : गाजर घास के प्रकोप से फसलों के उत्पादन में कमी आ रही है। साथ ही मनुष्य एलर्जी, एगिजामा, दमा व बुखार इत्यादि रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए इस घास को फूल आने से पहले ही उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के दिशा-निर्देशानुसार वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं।

इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सत्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह के दौरान बैनर के साथ मौजूद मुख्यातिथि डा. जीतराम शर्मा व अन्य। ●पीआरओ



हकूमि में आयोजित गाजर घास जागरूकता सप्ताह के दौरान बैनर के साथ मौजूद मुख्यातिथि डा. जीतराम शर्मा व अन्य। ●पीआरओ

साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डा. टीडरमल पुनिया भी उपस्थित रहे।

डा. जीतराम शर्मा ने कहा कि गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान का मुख्य उद्देश्य, गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाली एक घास बड़ी

तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कांग्रेस घास या चटक चांदनी आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ गेंदे का पौधा लगाकर इसके फुटाव व वृद्धि को रोका जा सकता है।

डा. टीडरमल पुनिया ने बताया कि इस पौधे का प्रवश हमारे देश में अमेरिका से आया त होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था।

तीन से चार माह में यह पौधा अपना जीवन-चक्र पूरा कर लेता है। उन्होंने बताया अब यह पौधा संभवत देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है।

सत्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. संजय कुमार ठकराल ने कहा कि सामूहिक प्रयास से ही गाजर घास की समस्या को नियंत्रण किया जा सकता है, इसलिए हमें इस अभियान का हिस्सा बनकर अपने आसपास के क्षेत्र को गाजर घास मुक्त करने में सहयोग देना होगा। इस दौरान डा. वीरेंद्र सिंह हुझा, डा. सुरेंद्र कुमार शर्मा, डा. सुरेश, डा. प्रवीन कुमार, डा. उमा देवी, डा. आरएस ददरवाल, डा. सपाल, डा. मूली देवी, डा. सुशील सिंह, डा. झाबरमल, डा. नीलम, डा. कविता, डा. पी कीर्ति, डा. निधि काम्बोज, डा. पारस काम्बोज, डा. एकता काम्बोज भी मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
‘उजीत समाचार’	२३-४-२३	५	५-४

हक्की ने गाजर धास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने किसानों को गाजर धास से फसलों व स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताया

हिसार, 22 अगस्त (विनेद वर्मा): गाजर धास के प्रकोप से फसलों के उत्पादन में कमी आ रही है, साथ ही मनुष्य एवं जीवन व वन्यजीवों के लिए खेत के चारों तरफ गंदी का पौधा इत्यादि रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए इस धास को फूल आने से पहले ही उत्थानकर नह कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देशानुसार वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर धास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सभ्य विभाग, विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर धास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यालियि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे। साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार

अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया भी उपस्थित रहे। मुख्यालियि डॉ. जीतराम शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि

चटक चांदनी आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर धास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ गंदी का पौधा लगाकर इसके फुटाव व बृद्धि को रोका

जीवन-चक्र पूरा कर लेता है। सभ्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. संजय कुमार लकड़ाल ने उपस्थित वैज्ञानिकों व अनुसंधान क्षेत्र के सहायकों को प्रेरित करते हुए कहा कि सामूहिक प्रयास से ही गाजर धास की समस्या को नियंत्रण किया जा सकता है। इसलिए हमें इस अभियान का हिस्सा बनकर अपने आसपास के क्षेत्र को गाजर धास मुक करने में सहयोग देना होगा। कार्यक्रम में घंघ संचालन डॉ. वीरेंद्र सिंह तुम्हा ने किया एवं गाजर धास को फहाने और इसकी रोकथाम से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी भी साझा की। इस अवसर पर डॉ. मुर्छंद कुमार शर्मा, डॉ. मुरेश, डॉ. प्रवीन कुमार, डॉ. उमा देवी, डॉ. आर.एस. दादबाल, डॉ. सतपाल, डॉ. मूली देवी, डॉ. सुरेश सिंह, डॉ. ज्ञानरमल, डॉ. नीलम, डॉ. कविता, डॉ. पी.कीर्ति, डॉ. निधि काम्बोज, डॉ. पारस काम्बोज एवं डॉ. एकता काम्बोज भी मौजूद रहे।



हक्की में आयोजित गाजर धास जागरूकता सप्ताह के दौरान बैनर के साथ मौजूद मुख्यालियि डॉ. जीतराम शर्मा व अन्य।

गाजर धास जागरूकता-सप्ताह व उन्मूलन अभियान का मुख्य व्येष्य गाजर धास के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानसुन शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाली एक धास बड़ी तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर धास, कांपीस धास या

जा सकता है। अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयत होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था। तीन से चार माह में यह पौधा अपना



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
टीआर . भूमि	23. ४. २३	10	6-8

किटानों को गाजर धास से फक्तलों व ट्वाट्स्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे किया जागरूक

■ लक्ष्मि ने गाजर धास जागरूकता
सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

के सस्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर धास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया।

इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यालियत के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहा। साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के



हिसार। हरियाणा में आयोजित गाजर धास जागरूकता सप्ताह के दैरान बैनर के साथ मीजूद मुख्यालियत डॉ. जीतराम शर्मा व अन्य।

फोटो: हरियाणा

मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया भी उपस्थित रहे।

मुख्यालियत डॉ. जीतराम शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि गाजर धास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान का मुख्य उद्देश्य गाजर धास के दुष्प्रभावों के

बारे में लोगों को जागरूक करना है।

उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियाँ वाली एक धास बड़ी तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर धास, कॉम्प्रेस धास व चट्क चांदी आदि नाम से भी जाना जाता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब मेसरी	23-8-23	2	7

हक्की ने गाजर धास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया

हिसार, 22 अगस्त (ब्यूरो): गाजर धास के प्रकोप से फसलों के उत्पादन में कमी आ रही है, साथ ही मनुष्य एलजी, एग्रिमा, दमाव बुखार इत्यादि रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए इस धास को पूल आने से पहले ही उत्थानकर नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. आर. काम्बोज के दिशा-निर्देशानुसार वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर धास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं।

इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सम्बन्धित विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर धास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अतार्थ एक कार्यक्रम में मुख्यतिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे। साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया भी उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उभर उजाला	23-8-23	3	5-6

गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूकता अभियान चलाया

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूकता अभियान चलाया गया। विश्वविद्यालय के सत्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे।

अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया भी उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियाँ बाली एक घास बड़ी तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कांगेस घास आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ गैंडे के पौधे लगाकर इसके फुटाव व वृद्धि को रोका जा सकता है। संयाद



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज़	22.08.2023	--	--

हक्की ने गाजर धास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया

वैज्ञानिकों ने किसानों को गाजर धास से फसलों व स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की दी जानकारी

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। गाजर धास के प्रकोप में फसलों के उत्पादन में कमी आ गई है, साथ ही मनुष्य एलजी, एजिमा, दम व चुखार इलाही रोगों से ग्रस्त हो गए हैं। इसलिए इस धास को फूल आने से पहले ही उत्खाकर नट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश पर में गाजर धास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कार्य में विश्वविद्यालय के सभ्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सलाहकार में सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर धास जागरूकता मप्राह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यालिंग के रूप में अनुग्रहान निदेशक डॉ. जीतेयम शर्मा गंगे। साथ ही अधिकल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अधिकारी डॉ. टोडमल पूर्णिया भी उपस्थित रहे।

मुख्यालिंग ने मंबोधित करते हुए कहा कि गाजर धास जागरूकता



लूही में उत्कृष्ट गाजर धास जागरूकता सप्ताह के दैशा केंद्र के साथ और गृह गुरुद्वारिये डॉ. जीतेयम शर्मा व अन्य।

सप्ताह व उन्मूलन अभियान का साधन व उत्कृष्ट गाजर धास के मुख्य उद्देश्य गाजर धास के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानवन् शूक्र होते ही गाजर के जैसी पौधारों वालों एक धास बढ़ी रोगी से बढ़नेवे फैलने लगते हैं, जिसे गाजर धास, कार्षित धास या चट्टक चंदनी आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर धास को नियंत्रण करने के लिए सूत के चारों तरफ रीट का पौधा सागरकर इसके फूटाव व धूंढ को रोका जा सकता है।

अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अधिकारी डॉ. टोडमल पूर्णिया ने बताया कि इस पौधे का प्रबोध हमारे देश में अभियान से आया होने वाले गोह के साथ मात्र 1955 में हआ था। तीन से चार माह में यह पौधा अपना जीवन-चक्र पूरा कर लेता है। उन्होंने बताया अब यह पौधा सेभवत देश के हर हिस्से में भौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। उन्होंने भी प्राकृतिक बनस्पतियों को खत्म होने

में बचाने और मानव स्वास्थ्य को ब्यान में रखते हुए इसको नियंत्रित किए जाने पर बल दिया।

इस अवसर पर डॉ. संजय कुमार उत्कर्ष, डॉ. वीरेंद्र मिंह बुड्डा, डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. सुरेश, डॉ. प्रसीन कुमार, डॉ. अंतोदय देश के हर हिस्से में भौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। उन्होंने भी प्राकृतिक बनस्पतियों को खत्म होने



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	22.08.2023	--	--

हकूमि के वैज्ञानिकों ने किसानों को गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में किया जागरूक

पांच बजे न्यूज

हिसार। गाजर घास के प्रबोध से फसलों के उत्तराधन में कमी आ रही है, साथ ही गन्धी घनाई, एनिल्डा, दमा व बुजार इत्यादि रोगों से अड़त हो रही है। इसीलिए इस घास को पूछ आने से जल्दी ही उदाहरणकर्ता नहीं कर देना चाहिए। इसको घास में रखते हुए नौजीवी विज्ञान विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लोकालंग फैसला भर में गाजर घास के प्रौढ़ विकास की जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सभी विज्ञान विभाग, जलवाया के खरपतवार अनुसंधान निदेशकालय के समुक्त समयान में सभी वैज्ञानिकों की ओर से गाजर घास जागरूकता संसाधन व उन्नालन अधिदान चलाया गया। इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में सुधारात्मिक के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतलाल शर्मा ही अद्वितीय भारतीय खरपतवार अनुसंधान विभाग देह के मुख्य अन्वेषक डॉ. टीडीसाहन पृष्ठिया भी उपर्युक्त रहे।



गुजरातीश्वर डॉ. जीतलाल शर्मा ने संस्कृति करते हुए कहा कि गाजर घास उदाहरणकर्ता घास या चट्टक छोटानी आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को विवरण करने के लिए संत के चले नरक ने तो का पीछा लगाकर उपर्युक्त प्रशासन व चुंदी को रोका जा सकता है। अद्वितीय भारतीय सुरक्षकवाद के मुख्य परिवर्तनी एक घास बहुत लंबी से बढ़ने

व कैलाने लगती है, जिसे गाजर घास, जारोमाया घास या चट्टक छोटानी आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को विवरण करने पर जल जाती है, तो अपने आस-आस विसर्जनी अन्य पौधे को ज्याने नहीं देती है जिसके कारण अपनी स्फूर्तिपूर्ण जड़ी-बूटियाँ और वर्षागांठ के नष्ट हो जान की मम्मावन फैल से रहती है। उन्होंने भी प्राकृतिक वनस्पतियों

अन्वेषक डॉ. टीडीसाहन पृष्ठिया ने बताया कि इस पौधे का प्रयोग हावीर देश में अमेरिका से आया होने वाले गाजर घास की ओरेट करते हुए कहा सामूहिक प्रयास से ही गाजर घास समझने की नियत रखा जा सकता है। लैन में गाजर घास का हि यह फैल अपने अलाइस के बोत की ग जीवन-चक्र पूर्ण कर लेता है। उन्होंने बताया कि यह घास में मंबू भैंसेलाल है। चुंदी बैंड द्वारा बंदूड़ा ने जिस तरफ गाजर घास को पह और इसकी रोकथाम से बुझे महत्व कानकारी भी साझा की।

इस अवसर पर डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा, सुरेश, डॉ. प्रखेन बुमराह, डॉ. उमा रे द्वारा एस. दायरेकाल, डॉ. सतपाल, मूर्ती देवी, डॉ. मुरली मिश्र, डॉ. ज्ञानराम द्वारा, नीताम, डॉ. कविता, डॉ. वी. कोटिन, निविं शराम्भेज, डॉ. पामस वाम्बोज एवं एकता कवालोज भी शीघ्रता से:



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	22.08.2023	--	--

हक्कुवि ने गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्नमूलन अभियान चलाया

हिसार, 22 अगस्त (समाचार हरियाणा न्यूज) : गाजर घास के प्रोतोंप से जगती के उत्पादन में कमी आ रही है, यथा ही पूर्ण फार्म, पूर्णवार, रवा व तुकारा इत्यत्र गोरीं से गहर हो रहा है। इसलिए हम घास को पूर्ण आगे से पहले ही उत्पादक रा कर देता चाहिए। इसको घास में लगाने हुए बीचरे यिनी हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के बृहत्तरि प्रे. डॉ. अर. कामोदी के दिशा-निर्देशानुसार वैज्ञानिक लगावर प्रदेश भारत में गाजर घास के प्रति किसीको को जागरूक कर रहे हैं। हड्डी कड़ी में विश्वविद्यालय के गोव विज्ञान विभाग, उत्तराखण्ड के खागड़ी अनुसंधान विद्यालय के यूक यूवीन से सभी बृप्त विज्ञान केंद्रों और और से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्नमूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत एक जारीकरण में पृष्ठालिंग के स्वप्न में अनुसंधान विद्यालय हुए बीचराम गर्भीं से गोविंदिया करते हुए जागरूक गर्भीं के गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्नमूलन अभियान का शुरू दिन। गाजर घास के दृष्टिभूमि के बारे में लोगों को जागरूक करते हैं। उन्होंने कहा कि यात्राएँ शुरू होते ही गाजर के दौरे विकिर्ष बढ़ती हुक घास वहाँ होती है वहाँ पर फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कर्जित घास वा चट्टक भाईती भरती नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को निवेदित करने के लिए लोट के बारे बहुत गौरी की बीच लगावर लोटके पूराम ३ व त्रिंशु ओं देवी का रैत लोट देता में अपेक्षिता से अधिक होते गहरे गहरे गहरे के गाप यात्रा १९५५ में हुआ था। जीन में गाजर घास में यह एक अपेक्षित वैज्ञान-यक्ष पूजा कर लेता है। उन्होंने बहाया यह यह एक सभाव देता के इस दिन्ये में योगदृष्टि है और लगभग ३५ विद्यालय हिस्टोरियर शोराजल में ऐसा चुका है। जब यह शक्ति एक व्यक्ति पर वरप जाता है, तो अपेक्षित घास की जगह एक घासी जगह आवेदन की जगह आवेदन बहायापूर्ण वस्तु-सूची और चरणालीं के गह ही जर्न छोटी गापावन रैदा ही गई है। उन्होंने लो प्रादृश्यक वनस्पतियों को खाल होने से बचाने और घास जागरूक को घास में रखने हुए इसको विविध किए जाने पर बहु दिया। यसके विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष हुए चंद्रिंग कुमार उत्तराल ने उन्नमूलन वैज्ञानिकों व अनुसंधान देवत के महावक्तों को दीक्षित करते हुए कहा कि समृद्धि क्षमता से ही गाजर घास को जागरूक को निर्देशित किया जा सकता है। इसलिए हमें इस अभियान का हिस्सा बनाकर अपने जागरूक के होते ही गाजर घास यह बातें विद्युतीय देख दी गयी। वार्षिक वैभव गोव गोवीन्द गोव, चंद्रिंग कुमार, डॉ. अर. कामोदी, डॉ. एस. दासगांव, डॉ. मुरीद देवी, डॉ. श्रीनिवास, डॉ. वी. कौरी, डॉ. निर्मल कामोदी, डॉ. घास कामोदी एवं डॉ. एकल कामोदी भी शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम छोर न्यूज	22.08.2023	--	--

‘गाजर घास पौधे का प्रवेश भारत में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था’

नम-छोर न्यूज ॥ 22 अगस्त
हिसार। गाजर घास के प्रकोप से
फसलों के उत्पादन में कमी आ-
रही है, साथ ही मनुष्य एलजी,
एरिजिमा, दमा व बुखार इत्यादि
रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए
इस घास को फूल आने से पहले ही
उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के
वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में
गाजर घास के प्रति किसानों को
जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी
में विश्वविद्यालय के सस्य
विज्ञान विभाग, जबलपुर के
खरपतवार अनुसंधान
निदेशालय के संयुक्त सहयोग
से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की
ओर से गाजर घास जागरूकता
सप्ताह व उन्नमूलन अभियान
चलाया गया। इसके अंतर्गत एक
कार्यक्रम में मुख्यातिथि के
रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ.
जीतराम शर्मा रहे। साथ ही
अखिल भारतीय खरपतवार
अनुसंधान परियोजना हिसार
केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ.

टोडरमल पूनिया भी उपस्थित
रहे। मुख्यातिथि डॉ. जीतराम
शर्मा ने कहा कि गाजर घास
जागरूकता सप्ताह व
उन्नमूलन अभियान का मुख्य
उद्देश्य गाजर घास के
दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को
जागरूक करना है। उन्होंने
कहा कि मानसुन शुरू होते ही
गाजर के जैसी पत्तियों वाली
एक घास बड़ी तेजी से बढ़ने व
फैलने लगती है, जिसे गाजर
घास, कांग्रेस घास या चटक
चांदनी आदि नाम से भी जाना
जाता है। गाजर घास को
नियंत्रण करने के लिए खेत के
चारों तरफ गेंदे का पौधा
लगाकर इसके फुटाव व बृद्धि
को रोका जा सकता है। डॉ.
टोडरमल पूनिया ने बताया कि
इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में
अमेरिका से आयात होने वाले
गेहूं के साथ साल 1955 में
हुआ था। तीन से चार माह में
यह पौधा अपना जीवन-चक्र
पूरा कर लेता है। उन्होंने बताया
अब यह पौधा संभवतः देश के

हर हिस्से में मौजूद है और
लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर
क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब
यह शाक एक स्थान पर जम
जाती है, तो अपने आस-पास
किसी अन्य पौधे को जमने नहीं
देती है जिसके कारण अनेकों
महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और
चरागाहों के नष्ट हो जाने की
सम्भावना पैदा हो गई है।
उन्होंने भी प्राकृतिक
बनस्पतियों को खत्म होने से
बचाने और मानव स्वास्थ्य को
ध्यान में रखते हुए इसको
नियंत्रित किए जाने पर बल
दिया। सस्य विज्ञान विभाग के
विभागाध्यक्ष डॉ. संजय कुमार
ठकराल ने उपस्थित वैज्ञानिकों
व अनुसंधान क्षेत्र के सहायकों
को प्रेरित करते हुए कहा कि
सामृद्धिक प्रयास से ही गाजर
घास की समस्या को नियंत्रण
किया जा सकता है, इसलिए
हमें इस अभियान का हिस्सा
बनकर अपने आसपास के क्षेत्र
को गाजर घास मुक्त करने में
सहयोग देना होगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज़	22.08.2023	--	--

उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन से विद्यार्थियों को मिली स्वावलंबन की नई दिशा



विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए बंधुवा दत्तात्रेय

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। स्वावलंबी भारत अधियान के अंतर्गत विश्व उद्यमिता दिवस के अवसर पर उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में 120 उद्यमियों व 18 शिक्षण संस्थानों के 2000 से अधिक विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इस उद्यमिता सम्मेलन में शिक्षक जगत ने विद्यार्थियों को स्वावलंबन की नई दिशा मिली है। स्वावलंबी

भारत उद्यमिता के लकड़ बुड़ाओं को विद्यार्थियों व उद्यमियों को काफ़ी कुछ आशनिर्भर व सहकर बनाना ही यूल और है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अधियोजित उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में मुख्यालिखि गवायापाल बंधुवा दत्तात्रेय, अध्यक्ष इकायि के कुलकर्ति प्रै. बलदेव एज कालोज, प्रैस्क बक्सा टीएफ शर्मा व भारत भूषण के प्रैस्पार्टियो वल्लभ से

सम्मेलन में उद्यमियों व 18 शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने लिया भाग

इर्मा, प्रदीप बामल, डॉ. मलीम व डॉ. जलबीत महारा विशेष रूप से उपस्थित रहे।

सम्मेलन में स्वदेशी जगत्ता मंच के संस्थाय विधिकारी दीपक उर्मा ने कहा कि युवा उद्यमियों की तरफ बढ़े। योगल ने बताया कि गवायापाल ने सभी उद्यमियों को संयुक्त रूप से सम्मानित भी किया।

इस सम्मान में हिसार के एवन्मैट कॉलेज, जाट कॉलेज, डीएन कॉलेज, पोलिटेक्निक, गवन्मेंट कॉलेज, एफसी कॉलेज, कैंपस स्कूल, विधिज गवन्मेंट स्कूल, इंशीरियल कॉलेज, ओड्योएम कॉलेज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व गोदार प्रैशिक्षण केंद्र सहित कई शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	22.08.2023	--	--

उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन से विद्यार्थियों को मिली स्वावलंबन की नई दिशा

उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में उद्यमियों व 18 शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने लिया हिस्सा।



प्राचलक्षण्य भूमि

हिसार, 22 अगस्त : स्वावलंबनी भारत प्रशिक्षण के अंतर्गत विष्ट उद्यमियों द्वारा कर अवधारणा एवं उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में 120 उद्यमियों व 18 शिक्षण संस्थानों के 2000 से अधिक विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इस उद्यमिता सम्मेलन में लिखकर छापे वाले विद्यार्थियों को स्वावलंबन की नई दिशा मिली है। स्वावलंबनी भारत अधिकार के तहत युवाओं की आवाजिभे व सशक्त अवधारणा की मूल उद्देश्य है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अध्यक्ष उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में मुख्यहीती राज्यपाल बंकार दहोरें, ब्रजेश हवड़ीय के कृत्तव्यों परी, बलदेव राज कांडेज, और बनार दीपक रामो व भारत भूषण के प्रोफेटारी अस्स्य में विद्यार्थियों व उद्यमियों को काफी बहु बया सीखने को मिला। उद्यमिता

प्रोत्साहन सम्मेलन ही माफलनी में उद्यमिता प्रशिक्षण उद्यम के ग्राहीय प्रश्नों प्रश्नों अंतर्गत गोपनीय ने बताया कि इस सम्मेलन में दक्षिण प्रश्नों के माध्य-मध्य संजीव इर्षा, गम गमका लागड़ा, डॉ अंतीम योगा डैन, यात्रा यात्रा, विमला बालाल, भास शारी, प्रदीप बालल, डॉ भर्तीय व डॉ बलजीत सहारण विशेष रूप से उद्यमित है। सम्मेलन में सहारी हरियाणा भेद के रहनीय प्रश्नों की दीपक शर्मा ने कहा कि पुनरु उद्यमिता की तक्षण बढ़ी। उन्होंने कहा कि संगठित भेद व भाकारी विनाकर कून 3 करोड़ 80 लाख लोगों को ही रोजगार दे सके हैं। देश की जनसंख्या 142 करोड़ है। इम्फत तात्पर्य यह है कि अब लोगों को असंगति भेद ही रोजगार देता है। उन्होंने कहा कि तुरन्त बदल यही है, इसलिए असंगति भेद को बदलनी चुनिया के अनुबंध

संस्कृति होना पड़ेगा अन्यथा उनका व्यापार विदेशी कर्तव्यपोर्ट के हाथ में बच्चा जाएगा। उन्होंने स्वावलंबनी भारत अधिकार के अधिक से अधिक लोगों के जूहने की अपील भी की। दीपक शर्मा ने फर्ज से अर्ज या यहुये विभिन्न उद्यमियों का उद्घारण देते हुए स्वावलंबन की ताक कदम बढ़ाने का आह्वान किया। अनिल गोयल ने बताया कि सभी उद्यमियों जो संयुक्त रूप से सम्मिलित भी किया। इस समारोह में हिसार के गवर्नरेट कॉलेज, जार कॉलेज, दी एन कॉलेज, जॉनिलैनक, गवर्नरेट गर्ल्स कॉलेज, एड, री. कॉलेज, फैसल म्हूल, विधिव्य गवर्नरेट म्हूल, इंटरियल कॉलेज, ओडीएम कॉलेज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व रोडगढ़ प्रशिक्षण केंद्र नहिं कहे विद्युत संस्थानों के विद्यार्थियों ने बद-चक्रवर्त हिस्सा लिया।